

१४- दुर्बल नवजात शिशु को स्तनपान की समस्या

जिस शिशु का वजन २.५ किलो (ढाई किलो) से कम होता है उसकी गिनती दुर्बल शिशुओं में होती है। लेकिन १.५ किलो (डेढ़ किलो) से कम वजन अथवा आठ-साढ़े आठ महीने के गर्भ वाले शिशु को स्तनपान में कठिनाई होती है।

इन शिशुओं को स्तनपान कराते समय होने वाली मुख्य समस्याएं:

- ✦ कमजोर शिशु में चूसने तथा दूध गले से उतारने का ज्ञान तथा शक्ति विकसित नहीं होती है।
- ✦ वह कमजोर होने से स्तनपान करते समय जल्दी ही थक जाता है।
- ✦ पेट छोटा होने से एक बार में ज्यादा दूध नहीं पी सकता है। इस परिस्थिति में शिशु को बार-बार दूध पिलाने की आवश्यकता पड़ती है।
- ✦ बार-बार दूध पिलाने से माता थक जाती है और रातभर जागना भी पड़ता है।

दुर्बल शिशुओं की माता अपने शिशु के खुराक और भविष्य की हमेशा चिन्ता करती रहती है। कई बार समय से पूर्व प्रसव और दुर्बल शिशु को स्तनपान के बजाय पतली नली के माध्यम से दूध देने की जरूरत पड़ती है और कांच के बक्से में अथवा अस्पताल में शिशु को माता से दूर रखा जाता है। ऐसी परिस्थिति में माता दुखी रहती है। माताओं का आत्मविश्वास तथा मनोबल टूटने लगता है। जब माता को दूध निकालने को कहा जाता है तो उसके मन में कई बातें उमड़ने लगती हैं।

ऐसी माताएं सोचती हैं, “यह दूध मेरे शिशु के लिए कितना उपयोगी होगा?”, “क्या मैं अपने शिशु को स्तनपान करा सकूंगी?”, “इतने कमजोर शिशु को मैं पाल सकूंगी कि नहीं?” इस तरह से माताएं चिन्तित रहने लगती हैं और कई समस्याओं का शिकार होने लगती हैं। इस तरह माताएं भीतर ही भीतर घुटन महसूस करने लगती हैं। इसका असर दूध बनने की प्रक्रिया पर पड़ता है। धीरे-धीरे माता का दूध सूखने लगता है।

ऐसी परिस्थिति में क्या सावधानी बरतें?

- ✓ ऐसी परिस्थिति में माता तथा परिजनों को समझाएं कि दुर्बल शिशु के लिए उसकी माता का दूध ही सर्वश्रेष्ठ खुराक है। इसका कोई विकल्प नहीं है। स्तनपान अथवा नली से माता का दूध देने से कोई फर्क नहीं पड़ता है। दुर्बल शिशु के

विकास के लिए उसकी माता का ही योगदान महत्वपूर्ण है। इस तरह समझाने तथा हिम्मत देने से माता का आत्मविश्वास बढ़ता है। इसका काफी लाभ मिलता है।

- ✓ ऐसी माताओं को किसी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। हमेशा प्रफुल्लित रहने तथा धनात्मक सोच रखने से माता को इसका फायदा मिलता है।
- ✓ माता को पहले से ही समझा दें कि दुर्बल शिशु को क्या तकलीफ हो सकती है। इससे हिम्मत ना हारें और पूरी तरह शिशु पर ध्यान दें।
- ✓ अधिक मात्रा में दूध बनाने के लिए हर तीन घंटे के अन्तराल पर दिन में छह से सात बार हाथ से दूध निकालें।
- ✓ दुर्बल शिशु का काम माता स्वयं करे तो अच्छा है। अक्सर देखा जाता है कि शिशु को कपड़े बदलना, खिलाना, साफ करना, दवा पिलाना, मालिश करना आदि परिवार के अन्य सदस्य करते हैं। लेकिन दुर्बल शिशु की माता स्वयं अपने बच्चे को संवारती है तो उसे आत्मविश्वास जगता है और ज्यादा मात्रा में स्तन में दूध उतरता है।
- ✓ स्तनपान करते-करते शिशु थक जाए तो हाथ से दूध निकलाकर किसी पात्र में जमा करें तथा शिशु को पिलाएं। याद रहे कि पहले शिशु को स्वयं स्तनपान का प्रयास करने दें। जब शिशु काफी दुर्बल रहता है और गले से दूध नहीं उतार पाता है या तभी खांसी होने लगती है तो नली से दूध देना पड़ता है। लम्बे समय तक शिशु को नली से दूध देने की आवश्यकता पड़े तो माता को यह प्रक्रिया खुद सीख लेनी चाहिए।
- ✓ दुर्बल शिशु को माता का दूध नहीं पचने की स्थिति में लोग तरह-तरह की बातें करते हैं। लोग मानते हैं कि माता का दूध ठीक नहीं है। सच्चाई तो यह है कि दुर्बल शिशु के लिए उसकी माता के दूध से अच्छी दूसरी उत्तम खुराक नहीं हो सकती।
- ✓ दुर्बल शिशु को माता के दूध के अतिरिक्त कैल्शियम, फोस्फोरस, विटामिन डी, विटामिन ई, फोलिक एसिड देना पड़ता है। डेढ़ महीने के बाद लौह तत्व (आयरन) भी देना पड़ता है। इन सबके लिए चिकित्सकों की सलाह आवश्यक है।
- ✓ कोई दूसरी माता जिसने दुर्बल शिशु को पाला हो वो इस माता को प्रोत्साहित करें। इससे दुर्बल माता की हिम्मत बढ़ती है और आत्मविश्वास जगता है।